परमेश्वर की व्यवस्था

मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।

तू अपने लिए कोई मूर्ति या प्रतिमा न बनाना।

तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।

विश्राम के दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।

अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।

खून न करना।

व्याभिचार न करना।

चोरी न करना।

किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।

किसी के घर की सम्पत्ति का लालच न करना।

पाठ १० में हमने अध्ययन किया कि हम भविष्य में क्या करेंगे। इस पाठ में हम अध्ययन करेंगे कि हमें अभी, वर्तमान में क्या कुछ करना चाहिए।

परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को पत्थर की दो तख्तियों में लिख कर इस्राएल के महान अगुए मूसा को उसके लोगों के लिए दिया। यद्यपि ये प्राचीन काल के नियम हैं किन्तु आज भी हम उनका पालन कर सकते हैं।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

व्यवस्था का अर्थ एवं तात्पर्य

व्यवस्था का पालन

इस पाठ से आपको सहायता मिलेगी कि आप...

- दस आज्ञाओं में से प्रत्येक का अर्थ समझ सकें।
- महसूस कर सकें कि परमेश्वर ने नियम क्यों दिए।
- उसके नियमों को पालन करने की अपनी जिम्मेवारी स्वीकार कर सकें।

व्यवस्था का अर्थ एवं तात्पर्य

उद्देश्य १. दस आज्ञाओं की उनके संदर्भ के साथ सूची तैयार करना।

परमेश्वर ने मूसा से कहा, पहली तख्तियों के समान पत्थर की दो और तख्तियां गढ़ ले। तब जो वचन उन पहली तख्तियों पर लिखे थे जिन्हें तू ने तोड़ डाला वे ही वचन मैं इन तख्तियों पर भी लिखूंगा" (निर्गमन ३४:१)।

निर्गमन २० में परमेश्वर के द्वारा दी गयी दस आज्ञाएं हमारे लिए लिखी गई हैं। उसने ये नियम अपने बच्चों को पालन करने के लिए नियम और मार्गदर्शक के रूप में दिए हैं। आइए हम प्रत्येक नियम का एक-एक करके अध्ययन करें।

मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर कर के न मानना

जैसा कि हमने पाठ २ में अध्ययन किया, परमेश्वर को हमें प्रथम स्थान देना चाहिए। यह आज्ञा मत्ती ४:१० में दुहराई गई है "तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर"।

तू अपने लिए कोई भी मूर्ति या प्रतिमा न बनाना

हमारी निष्ठा परमेश्वर के प्रति है — हमारी निष्ठा भिन्न-भिन्न नहीं हो सकती। यीशु ने कहा कोई व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा (लूका १६:१३)। हमें प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य बनना एवं उससे पूरे हृदय से प्रेम करना चाहिए।

अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना

लोग परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेकर श्राप देने के द्वारा तीसरी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं। हम हमेशा इस नाम को जो सब नामों से श्रेष्ठ है प्रेम, आदर एवं सम्मान का स्थान देंगे।

कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो ताकि उससे सुनने वालों पर अनुग्रह हो (इफिसियों ४:२९)।

"कभी शपथ न खाना, न तो स्वर्ग की क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। न धरती की क्योंकि वह परमेश्वर की चौकी है; न यरूशलेम की क्योंकि वह महाराजा का नगर है" (मत्ती ५:३४-३५)।

विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना

केवल यही एक आज्ञा है जिसे नए नियम में दुहराया नहीं गया है। लगभग सभी मसीही, यहूदी सब्त को नहीं मानते। वह रविवार के दिन को मानते हैं क्योंकि सप्ताह के इस प्रथम दिन में यीशु मुर्दों में से जी उठा। प्रत्येक प्रभु का दिन हमें उसके पुनरुत्थान का स्मरण दिलाता है। यह महत्वपूर्ण है कि हम एक दिन नियुक्त करके विश्राम एवं आराधना करें, किन्तु कौन सा दिन हम चुनें यह दूसरी बात है। कुलुस्सियों २:१६ कहता है "खाने पीने या पर्ब्व या नए चांद या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करें"।

कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानता है और कोई सब दिन एक समान जानता है। हर एक अपने ही मन में निश्चय कर लें (रोमियों १४:५)।

अपने पिता और अपनी माता का आदर करना

निर्गमन २०:१२ आज्ञाकारी बच्चों से एक विशेष प्रतिज्ञा करता है, "तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए।" नया नियम इसे और सुदृढ़ करता है।

"हे बालको, प्रभु में अपने मता-पिता के आज्ञाकारी बनो क्योंकि यह उचित है" (इफिसियों ६:१)।

खून न करना

पहला खूनी कैन था जिसने अपने भाई हाबिल का खून किया था। शायद कैन ने सोचा कि जो कुछ हुआ उसे किसी ने नहीं देखा, किन्तु परमेश्वर ने देखा। उसने कैन से कहा "तू ने क्या किया है? तेरे भाई का लोहू भूमि से मेरी ओर चिल्ला कर मेरी दोहाई दे रहा है" (उत्पत्ती ४:१०)।

खून करना एक पाप है जिसकी लम्बी प्रतिक्रिया होती है — इससे खून करने वाले एवं खून किए गए परिवार को चोट पहुंचती है। यह परमेश्वर के विरुद्ध भी एक बड़ा अपराध है क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी समानता में बनाया है।

व्याभिचार न करना

अपने विवाहित साथी को छोड़ दूसरे के साथ लैंगिक सम्बन्ध रख कर विवाह की प्रतिज्ञा को तोड़ने का पाप व्याभिचार कहलाता है। इब्रानियों १३:४ कहता है, "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए और बिछौना निष्कलंक रहे क्योंकि परमेश्वर व्याभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।"

चोरी न करना

दूसरों की चीजों को लेना गलत है भले ही वह ऐसे व्यक्ति की क्यों न हो जो धनी है एवं उसे इसकी आवश्यकता नहीं।

चोरी करने वाला फिर चोरी न करे वरन भले कार्य करने में अपने हाथों से परिश्रम करे इसलिए कि जिसे प्रयोजन हो उसे देने को उसके पास कुछ हो (इफिसियों ४:२८)।

किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना

नवीं आज्ञा के अन्तर्गत सभी झूठ आते हैं। चाहे वे कहने के द्वारा हों या कार्य के द्वारा। परमेश्वर के लिए अच्छे और बुरे "झूठ" में कोई अन्तर

नहीं है। सभी झूठा दोष लगाने वाले गलत है। भजन संहिता १०१:७ कहता है "जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा; जो झूठ बोलता है वह सामने बना न रहेगा।"

पर डरपोकों और अविश्वासियों और घिनौनों और हत्यारों और व्याभिचारियों और टोन्हों और मूर्ति पूजकों और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गंधक से जलती रहती है, यह दूसरी मृत्यु है। (प्रकाशित वाक्य २१:८)।

किसी के घर की सम्पत्ति का लालच न करना

दूसरे की चीजों पर गलत अभिलाषा करना लालच कहलाता है। लूका १२:१५ उसे यूं कहता है "चौकस रहो और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।"

परमेश्वर ने ये आज्ञाएं हमें बुराई से हटकर सच्चाई में चलना सिखाने एवं किसी बात पर निर्णय लेने में हमारा मार्ग-दर्शन करने के लिए दी है।

तब फिर व्यवस्था क्या रही? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई और वे अब्राहम के वश आने तक रहे जिसको प्रतिज्ञा दी गई थी इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुंचने को हमारा शिक्षक हुई कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें (गलतियों ३:१९, २४)।

जो आपको करना है

१. निर्गमन २० पढ़ें। तब प्रत्येक आज्ञा को उसके संदर्भ के साथ संक्षिप्त में लिखें।

अ. एक .....

.....

ब. दो .....

.....

स. तीन .....

.....

ड. चार .....

.....

इ. पांच .....

.....

फ. छ .....

.....

ज. सात .....

.....

ह. आठ .....

.....

क. नौ.....

.....

ख. दस.....

.....

२. इब्रानियों १३:५ को पढ़ें। इस पद को लिखते समय कौन सी आज्ञा या आज्ञाएं पौलुस के दिमाग में रही होंगी।

.....

.....

व्यवस्था का पालन

उद्देश्य २. परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति एक विश्वासी की जिम्मेवारी को समझना।

प्रभु चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन न सिर्फ कार्यों के द्वारा किन्तु अपने आचार व्यवहार के द्वारा भी करें — प्रेम का व्यवहार, एक दूसरे को अपने से ऊँचा समझने की प्रार्थना।

आज्ञाएं, "व्याभिचार न करना, खून न करना, चोरी न करना; दूसरों की चीजों का लालच न करना" ये सभी या और भी दूसरी आज्ञाओं का सारांश हम इस एक आज्ञा में कर सकते हैं "अपने पड़ौसी से अपने समान प्रेम रख" (रोमियों १३:९)।

"परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं" (१ यूहन्ना ५:३)।

हम यह पहले ही जान चुके हैं कि व्यवस्था के पालन मात्र से ही हमारा उद्धार नहीं होता। हमारा उद्धार यीशु मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा अनुग्रह से होता है। इफिसियों २:८-९ इस बात की पुष्टि करता है —

> "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करें।"

तो भी हम प्रभु की आज्ञा मानते हैं क्योंकि उसके बच्चों के रूप में हम उसको सर्वाधिक प्रसन्न रखना चाहते हैं। यदि उसकी आज्ञाओं में से किसी का भी उल्लंघन करें तो तुरन्त उससे क्षमा मांग कर अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करना चाहिए।

हे बालको, मैं यह बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं कि तुम पाप न करो और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह। और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है और केवल हमारे ही नहीं वरन सारे जगत के पापों का भी (१ यूहन्ना २:१-२)।

क्या आपने कभी अपने को कमजोर महसूस किया और यहां तक कि आपने आज्ञा का उल्लंघन किया? प्रभु यीशु आपको आपकी आवश्यकता के अनुसार सहायता एवं सामर्थ प्रदान करेगा। क्या आप अभी सिर झुका कर उससे सहायता की मांग करेंगे?

स्वर्गवासी पिता, मुझे क्षमा कर क्यों कि मैं तुझ से जैसा प्रेम रखना चाहिए वैसा करने में असमर्थ हूं। मेरी सहायता कर कि मैं पाप एवं आज्ञा उल्लंघन न करूं जब कि अब मैं इन्हें अच्छी तरह समझता हूं।

प्रभु मैं चाहता हूं कि मैं तुझ से प्रेम एवं तेरे नाम का समर्थन अपने परिवार को प्रेम करने एवं उनका समर्थन करने से भी बढ़कर कर सकूं। तुझ से प्रार्थना है कि तू मुझे अपनी सामर्थ दे क्योंकि मैं यीशु के नाम से मांगता हूं जिसने मेरे बदले अपने प्राण दे दिए। आमीन।

जो आपको करना है

३. १ यूहन्ना ३:१५-१८ पढ़ें। इन पदों के अनुसार निम्नलिखित कौन-कौन से कथन सही है?

अ. आचार-व्यवहार उतने ही महत्वपूर्ण है जितने कार्य।

ब. जो अपने भाई से बैर रखता है वह खूनी है।

स. अपने परमेश्वर से एवं भाई से प्रेम रखना भी एक आज्ञा है।

४. रोमियों ८:३-४ पढ़ें। नीचे लिखे कथनों को सही-सही पूरा करें।

अ. परमेश्वर ने पाप पर दण्ड की आज्ञा .... के द्वारा दी।

ब. व्यवस्था की विधि हममें भली भांति पूरी होती है क्योंकि हम .... के अनुसार चलते हैं।

५. यूहन्ना १४:२१ पढ़ें। इस पद के अनुसार

अ. जो परमेश्वर से प्रेम रखता है वह .... को मानेगा।

ब. परमेश्वर इसके बदले स्वयं प्रतिज्ञा करता है कि वह

.....

.....

अपने उत्तरों की जांच करें

१. निम्नलिखित पदों से अपने उत्तरों की जांच करें :

अ. निर्गमन २०:३

ब. २०:४-६

स. २०:७

ड. २०:८-११

इ. २०:१२

फ. २०:१३

ज. २०:१४

ह. २०:१५

क. २०:१६

ख. २०:१७

४. अ. अपने पुत्र को भेजने

ब. आत्मा के अनुसार, पापमय शरीर के अनुसार नहीं।

२. हो सकता है कि पौलुस सोच रहा था "मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना"। क्योंकि कुछ लोग अपने पैसों से परमेश्वर से बढ़कर प्रेम रखते हैं। या वह सोच रहा था "चोरी न करना" क्योंकि वह कहता है कि परमेश्वर तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा अतः चोरी करने की आवश्यकता नहीं।

या वह यह भी सोच रहा था "किसी की सम्पत्ति का लालच न करना" क्योंकि वह कहता है कि "जो कुछ तुम्हारे पास है उसी पर संतोष करो"।

५. अ. उसकी आज्ञाओं को स्वीकार करके उनका पालन करेगा।

ब. प्रेम करेगा एवं अपने आप को उन पर प्रगट करेगा।

३. सभी कथन सही है।

आपकी टिप्पणी के लिए